पूजाघर एवं पूजाके उपकरण

(अध्यात्मशास्त्रीय महत्त्व एवं संरचना)

अनुक्रमणिका

卐 परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय ! ६

卐 आध्यात्मिक परिभाषामें प्रस्तावना ! ११

卐 भूमिका १३

१. पूजाघर किस दिशामें हो ? १५

२. पूजाघरका स्वरूप कैसा होना चाहिए ? १६

२ आ. पूजाघरका रंग कैसा होना चाहिए ? १६

३. पूजाघरमें देवताओंकी संरचना कैसे करें ? २८

४. उपकरण शब्दकी परिभाषा और अर्थ ३८

५. देवतापूजनमें प्रयुक्त होनेवाले विविध उपकरण ३८

६. पूजाके उपकरण किस धातुके होने चाहिए ? ३९

७. देवतापूजन हेतु पुराने उपकरणोंका उपयोग क्यों करें ? ४३

८. देवतापूजनमें प्रयुक्त उपकरणोंका महत्त्व ४५
९. देवतापूजनके घटक एवं उपकरणोंकी संरचना ६६
१०. उपकरणोंके विषयमें अनुभूतियां ७६
卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण** ७८

देवताओंके प्रति श्रद्धा दृढ करने हेतु सहायक सनातनका लघुग्रन्थ !

आरती कैसे करें ?

- 卐 आरतीके पूर्व शंख क्यों और कैसे बजाएं ?
- 卐 आरती उचित उच्चारणसहित क्यों गाएं ?
- 卐 आरतीके समय ताली एवं वाद्य कैसे बजाएं ?
- 卐 आरती ग्रहण करनेकी उचित पद्धति क्या है ?
- 卐 आरतीके उपरान्त देवताओंका जयघोष क्यों करें ?

भूमिका

ईश्वरप्राप्तिके लिए भक्तिमार्गसे उपासना करनेवालोंकी दृष्टिसे 'देवतापूजन' महत्त्वपूर्ण है; ऐसेमें पूजाघर अनिवार्य है । आजकल अधिकांश घरोंमें सुविधा अनुसार अथवा शोभा हेतु, अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणका विशेष विचार किए बिना पूजाघर बनाया जाता है । अध्यात्ममें प्रत्येक कृत्यके विशिष्ट पद्धतिके पीछे कुछ शास्त्र होता है अर्थात उस प्रकार करनेसे आध्यात्मिक लाभ अधिक मिलता है । इसीलिए प्रस्तुत लघुग्रन्थमें पूजाघरकी दिशा, रंग, रूप तथा आकार, देवताओंकी संरचना इत्यादि के सन्दर्भमें अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी दी है ।

ताम्रपात्र, पूजाकी थाली, नीरांजन, घण्टी, दीपस्तम्भ इत्यादि देवतापूजनके लिए आवश्यक उपकरण हैं । पूजाविधि से देवताकी कृपा प्राप्त करनेमें ये एक महत्त्वपूर्ण सेतु हैं । देवतापूजन आरम्भ करनेसे पूर्व इन उपकरणोंकी संरचना विशिष्ट पद्धतिसे करनेपर, तदुपरान्त पूजाविधिसे देवताके

तत्त्वका लाभ अधिक मात्रामें क्यों एवं कैसे मिलता है, इसका भी अध्यात्मशास्त्रीय विश्लेषण इस लघुग्रन्थमें किया गया है । देवतापूजनके उपकरणोंका अध्यात्मशास्त्रीय महत्त्व समझ लेनेपर उनके प्रति भाव उत्पन्न होनेमें सहायता मिलती है । भावपूर्ण अन्तःकरणसे देवताका पूजन करनेपर, पूजा भावपूर्ण होती है । भावपूर्ण देवतापूजनसे देवताके तत्त्वका अधिक लाभ मिलता है । इसलिए इस लघुग्रन्थमें देवतापूजनके उपकरणोंका अध्यात्मशास्त्रीय महत्त्व एवं विशेषताएं भी दी हैं ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थमें दिए धर्मशास्त्रको समझकर कृत्य करनेवालेको ईश्वरीय तत्त्वका अधिकाधिक लाभ मिले । – **संकलनकर्ता**

पूजाविधि भावपूर्वक कर पाने हेतु उपयुक्त प्रमाणित होनेवाला सनातनका लघुग्रन्थ अवश्य पढें !

पूजासामग्रीका महत्त्व